फसल अवशेष न जलाए, कंपोस्ट खाद बनाए किसानः डॉ. खलील

कानपुर। सीएसए द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, अनौगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं। क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना,पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है।मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं।जिसके कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते। जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं।परिणाम स्वरूप अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ–साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है।उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है। वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को सलाह दी है कि मई माह में फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों मैं प्रयोग करें। इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी। तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा।जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है।फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है। जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मृदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हुए वातावरण को स्वच्छ बनाएं। जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें। उन्होंने बताया कि इकोनामिक टाइम्स के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार देश एवं प्रदेश सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश में गेहूं एवं धान के फसल अवशेषों को जलाने में कमी आई है। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसान भाइयों से अपील की है। कि वह गेहूं एवं अन्य रबी की फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे तवेदार हैरो से जुताई करके फसल अवशेषों को खेत में दबा दें।जिससे मृदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोतरी होगी। और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी। इसके अतिरिक्त गेहूं एवं अन्य रबी फसल के फसल अवशेषों को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करते हुए 8 से 10 दिन में फसल अवशेष सड़ जाएगी व खेत में उत्तम खाद का काम करेगी। जिससे मृदा को सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती है।

हिन्दुस्तान
कानपुर • शुक्रवार • 14 मई 2021 | 07

घरों में ऐसे पौधे लगाइए जिनसे मिले ऑक्सीजन

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

कोरोना संक्रमण से बचने के लिए सिर्फ घर में रहना जरूरी नहीं है बल्कि शुद्ध वातावरण भी आवश्यक है। घरों में ऐसे पौधों को लगाएं, जो कार्बन डाई ऑक्साइड समेत कई अन्य गैसों को अवशोषित करने संग ऑक्सीजन को बाहर निकालें। सीएसए अभियान चला रहा है। विवि मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान ने बताया कि इन पौधों को लगाने से घर का माहौल शुद्ध रहता है व ऑक्सीजन का लेवल बढ़ा रहता है। इन पौधों को एयर फिल्टरिंग प्लांट भी कहते हैं।

ये पौधे लगाना होगा फायेदमंद : मनी प्लांट झ यह एक बेल है। यह,कम रोशनी में भी जिंदा रहता है और खाली बोतल में लगाया जा सकता है। यह वायु में मौजूद कार्बन डाई ऑक्साइडको ग्रहण कर ऑक्सीजन बाहर निकालता है। इससे घर में कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा कम और ऑक्सीजन अधिक होती है।

एलोवेरा: यह औषधीय पौधा है। घर की हवा शुद्ध रखता है। इसकी पत्तियों से निकलने वाले रस का इस्तेमाल कई बीमारियों में किया जाता है।

स्नेक प्लांट- इस पौधे को बहुत कम धूप की जरूरत होती है। इसके अलावा पानी की भी जरूरत ज्यादा नहीं होती। हवा को फिल्टर करता है।

पाइन प्लांट- घर की हवा को शुद्ध बनाने के लिए देवदार का पौधा काफी मशहूर है। इसे बहुत ज्यादा देखभाल की जरूरत नहीं होती।

पीस लिली- पीस लिली घरों हानिकारक गैसों को खत्म करता है। यह धूल को भी समाप्त करता है और घर की हवा को शुद्ध रखता है।

14 may 2021 satta express.pdf

आर.एन.आई.नं.- UPHIN/2009/44666

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

सत्ता एक्सप्रेस

डी.ए.वी.पी. नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त

वर्ष: 12 अंक : 210 कानपुर देहात,शुक्रवार 14 मई 2021 Email: sattaexpress@rediffmail.com

फसल अवशेष न जलाए,कंपोस्ट खाद बनाए किसान- डॉ खलील खान,मृदावैज्ञानिक

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र,अनौगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं। क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना,पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है।मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं।जिसके कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते। जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं।परिणाम स्वरूप अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ–साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है।उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है। वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने

की संभावनाएं बनी रहती है। उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को सलाह दी है कि मई माह में फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों मैं प्रयोग करें। इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी। तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा।जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है।फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है। जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मृदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हुए वातावरण को स्वच्छ बनाएं। जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें। उन्होंने बताया कि इकोनामिक टाइम्स के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार देश एवं प्रदेश सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश में गेहूं एवं धान के फसल अवशेषों को जलाने में कमी आई है। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसान भाइयों से अपील की है। कि वह गेहूं एवं अन्य रबी की फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे तवेदार हैरो से जुताई करके फसल अवशेषों को खेत में दबा दें।जिससे मृदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोतरी होगी। और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी। इसके अतिरिक्त गेहूं एवं अन्य रबी फसल के फसल अवशेषों को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करते हुए 8 से 10 दिन में फसल अवशेष सड़ जाएगी व खेत में उत्तम खाद का काम करेगी। जिससे मृदा को सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती है।

फसल अवशेष न जलाए, कंपोस्ट खाद बनाए किसानः डॉ. खलील

कानपुर। सीएसए द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, अनौगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं। क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना,पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है।मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं।जिसके कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते। जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं।परिणाम स्वरूप अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ–साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है।उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है। वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को सलाह दी है कि मई माह में फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों मैं प्रयोग करें। इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी। तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा।जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है।फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है। जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मृदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हुए वातावरण को स्वच्छ बनाएं। जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें। उन्होंने बताया कि इकोनामिक टाइम्स के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार देश एवं प्रदेश सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश में गेहूं एवं धान के फसल अवशेषों को जलाने में कमी आई है। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसान भाइयों से अपील की है। कि वह गेहूं एवं अन्य रबी की फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे तवेदार हैरो से जुताई करके फसल अवशेषों को खेत में दबा दें।जिससे मृदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोतरी होगी। और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी। इसके अतिरिक्त गेहूं एवं अन्य रबी फसल के फसल अवशेषों को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करते हुए 8 से 10 दिन में फसल अवशेष सड़ जाएगी व खेत में उत्तम खाद का काम करेगी। जिससे मृदा को सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती है।

फसल अवशेष न जलाएं, कंपोस्ट खाद बनाएं किसान : डॉ. खलील

14/05/2021 राष्ट्रीय स्वरूप

कानपुर। सीएसए द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्रए अनौगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं। क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़ तना पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। जिसके कारण मृदा के भौतिकए रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है।मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं।जिसके कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते। जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं।परिणाम स्वरूप अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ.साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है।उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगन की संभावना बनी रहती है। वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को सलाह दी है कि मई माह में फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों मैं प्रयोग करें। इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी। तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा।जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है।फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है। जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मृदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हुए वातावरण को स्वच्छ बनाएं। जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें। उन्होंने बताया कि इकोनामिक टाइम्स के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार देश एवं प्रदेश सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश में गेहूं एवं धान के फसल अवशेषों को जलाने में कमी आई है। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसान भाइयों से अपील की है। कि वह गेहूं एवं अन्य रबी की फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे तवेदार हैरो से जुताई करके फसल अवशेषों को खेत में दबा दें।जिससे मृदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोतरी होगी। और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी। इसके अतिरिक्त गेहूं एवं अन्य रबी फसल के फसल अवशेषों को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करते हुए 8 से 10 दिन में फसल अवशेष सड़ जाएगी व खेत में उत्तम खाद का काम करेगी। जिससे मृदा को सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती है।

14 may_jan express.pdf - Read-only

जन एक्सप्रेस

लखनऊ, शुक्रवार, 14 मई, 2021, वर्ष : 12, अंक : 210, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

www.janexpresslive.com/epaper

कटाई के बाद फसल अवशेषों को खेत में ना जलाने की अपील

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के बाद फसल अवशेषों को खेत में ना जलाने की अपील किसानों से सीएसएयू के कृषि विज्ञान केंद्र अनौगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने की है। उन्होंने बताया कि फसलों के अवशेषों को जलाने से उनके जड़, तना,पत्तियों आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं और मृदा के तापमान में वृद्धि भी हो जाती है जिसके कारण मिट्टी की भौतिक रासायनिक और जैविक दशा पर विपरीत प्रभाव पड़ने के साथ मृदा में मौजूद सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं तथा मृदा में उपस्थित जीवांशो के अच्छी तरह ना सड़ पाने के कारण पौधों को पोषक तत्व प्राप्त नहीं हो पाते हैं जिससे अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है।

डॉ. खान ने कहा कि खेत में उसे जलाने से उत्पन्न वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी घातक बीमारियां हो सकती हैं तथा फसलों और घरों में आग लगने का डर बना रहता है मई के महीने में फसल अवशेषों का उचित प्रबंध कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों में प्रयोग करें इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ भूमि में लाभदायक जीवाणुओं की संख्या में भी वृद्धि होती है। उन्होंने किसानो से गेहूं एवं अन्य रबी की फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के बाद फसल अवशेष प्रबंधन के लिए आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे तवेदार हैरो से जुताई करके फसल अवशेषों को खेत में दबाने की बात कही जिससे मृदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोत्तरी होगी और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:12 | अंक:137 | देहरादून, गुरुवार, 13 मई, 2021 | पृष्ठ:08

फसल अवशेष न जलाएं, कंपोस्ट खाद बनाए किसान: डॉ खलील खान

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कन्नौज/कानपुर: कृषि विज्ञान केंद्र, अनौगी (कन्नौज) के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों मे गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना, पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं जिसके कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं परिणाम स्वरूप अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ–साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को सलाह दी है कि मई माह में फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों में प्रयोग करें इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मृदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हुए वातावरण को स्वच्छ बनाएं जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें उन्होंने बताया कि इकोनामिक टाइम्स के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार देश एवं प्रदेश सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश में गेहूं एवं धान के फसल अवशेषों को जलाने में कमी आई है मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसान भाइयों से अपील की है कि वह गेहूं एवं अन्य रबी की फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे तवेदार हैरो से जुताई करके फसल अवशेषों को खेत में दबा दें जिससे मृदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोतरी होगी और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी इसके अतिरिक्त गेहूं एवं अन्य रबी फसल के फसल अवशेषों को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करते हुए 8 से 10 दिन में फसल अवशेष सड़ जाएगी व खेत में उत्तम खाद का काम करेगी जिससे मृदा को सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती है।

अमर उजाला
शुक्रवार • 14.05.2021
05
kanpur@amarujala.com

पौधे लगाएं, भरपूर ऑक्सीजन पाएं

कानपुर। कोरोना संक्रमण से बचने के लिए चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने अभियान शुरू किया है। इस अभियान में लोगों से ऐसे पौधे लगाने की अपील कर रहे हैं कि जो हानिकारक गैसों को अवशोषित कर ऑक्सीजन छोड़ते हैं। विवि के मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान ने बताया कि देवदार, मनी प्लांट, पीस लिली, एलोविरा, स्नैक प्लांट लगाना लाभदायक है। (ब्यूरो)

AAJ KA KANPUR.pdf - Read-only

अंक-81 कानपुर, शुक्रवार 14 मई 2021 पृष्ठ-8

दैनिक

आज का कानपुर

कानपुर से प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, मैनपुरी, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, औरैया, बांदा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, बहराइच में प्रसारित

फसल अवशेष न जलाए,कंपोस्ट खाद बनाए किसान- डॉ खलील खान

कन्नौज/कानपुर-कृषि विज्ञान केंद्र, अनौगी (कन्नौज) के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना,पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं जिसके कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं परिणाम स्वरूप अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है

इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ-साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को सलाह दी है कि मई माह में फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों में प्रयोग करें इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मृदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हुए वातावरण को स्वच्छ बनाएं जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें उन्होंने बताया कि इकोनामिक टाइम्स के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार देश एवं प्रदेश सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश में गेहूं एवं धान के फसल अवशेषों को जलाने में कमी आई है मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसान भाइयों से अपील की है कि वह गेहूं एवं अन्य रबी की फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे तवेदार हैरो से जुताई करके फसल अवशेषों को खेत में दबा दें जिससे मृदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोतरी होगी और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी इसके अतिरिक्त गेहूं एवं अन्य रबी फसल के फसल अवशेषों को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करते हुए 8 से 10 दिन में फसल अवशेष सड़ जाएगी व खेत में उत्तम खाद का काम करेगी जिससे मृदा को सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती है

लखनऊ संस्करण
शुक्रवार, 14 मई, 2021
पृष्ठ 12

देश का सबसे विश्वसनीय अखबार

दैनिक भास्कर

For epaper → www.updainikbhaskar.com

फसल अवशेष न जलाएं, कंपोस्ट खाद बनाएं किसान : डॉ खलील

कानपुर। सीएसए द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, अनौगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं। क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना,पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है।मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। जिसके कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते। जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं। परिणाम स्वरूप अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ-साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है।उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है। वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को सलाह दी है कि मई माह में फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों मैं प्रयोग करें। इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी। तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा।जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है।फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है। जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मृदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है।

R.N.I. NO UPHIN@ 2013/53179

कानपुर नगर कानपुर देहात उन्नाव हमीरपुर कन्नौज इटावा अई जालौन लखनऊ आगरा मथुरा औरैया इलाहाबाद से एक साथ प्रसारित

वर्ष - 8
अंक - 201
कानपुर,
शुक्रवार, 14
मई 2021
पृष्ठ - 4
मूल्य 1:00

सोशल रिपोर्टर

हिन्दी दैनिक

फसल अवशेष न जलाए,कंपोस्ट खाद बनाए किसान- डॉ खलील खान

कानपुर, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा

सोशल रिपोर्टर
हिन्दी दैनिक
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक,सत्यप्रकाश द्वारा जय बजरंग प्रिंटर्स 402 ब्लॉक पनकी, कानपुर से मुद्रित एवं सचेन्डी कानपुर नगर से प्रकाशित।

सम्पादक **मनोज मिश्रा**
मो. 97 94 35 32 27
9794016473
सह संपादक-लक्ष्मीकांत शर्मा
प्रभारी संपादक-ओमहरि शर्मा
प्रबंध संपादक-ओम जी
विधि सलाहकार-हर्षवर्धन द्विवेदी
राजेश विश्वकर्मा
socialreporter2013@gmail.com
जिला संवाददाता उन्नाव
समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र कानपुर नगर न्यायालय होगा।

संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, अनौगी के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं। क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना,पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है। जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है।मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। जिसके कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते। जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं।परिणाम स्वरूप अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ-साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है।उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है। वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को सलाह दी है कि मई माह

में फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों में प्रयोग करें। इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी। तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा।जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है।फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है। जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मृदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ते हुए वातावरण को स्वच्छ बनाएं। जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें। उन्होंने बताया कि इकोनामिक टाइम्स के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार देश एवं प्रदेश सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश में गेहूं एवं धान के फसल अवशेषों को जलाने में कमी आई है। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसान भाइयों से अपील

हिन्दी दैनिक

R.N.I.No-UPHIN/2012/42725

हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित

25 ● कानपुर गुरुवार 13 मई 2021 - पृष्ठ: 8 - मूल्य: 1.00 रू.

फसल अवशेष न जलाए, कंपोस्ट खाद बनाए किसान: डॉ खलील खान

कन्नौज/कानपुर- कृषि विज्ञान केंद्र, अनौगी (कन्नौज) के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील की है कि वे अपने खेतों में गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की हार्वेस्टर से कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं क्योंकि फसलों के अवशेषों को जलाने में उनके जड़, तना, पत्तियां आदि के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने यह भी बताया कि फसल अवशेषों को जलाने से मृदा के तापमान में वृद्धि हो जाती है जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत असर पड़ता है मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं जिसके कारण मृदा में उपस्थित जीवांश अच्छी प्रकार से सड़ नहीं पाते जिससे पौधे पोषक तत्व प्राप्त नहीं कर पाते हैं परिणाम स्वरूप अगली फसल के उत्पादन में गिरावट आती है इसके अतिरिक्त वातावरण के साथ-साथ पशुओं के चारे के लिए भी व्यवस्था करने हेतु समस्या आती है उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों में आग लगाने से अन्य फसलों तथा घरों में भी आग लगने की संभावना बनी रहती है वायु प्रदूषण से अस्थमा और एलर्जी जैसी कई प्रकार की घातक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है एवं दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं बनी रहती हैं उन्होंने यह भी बताया कि किसान भाइयों को सलाह दी है कि मई माह में फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट खाद बनाकर खेतों में प्रयोग करें इससे खेत की उर्वरा शक्ति के साथ ही भूमि में लाभदायक जीवाणु की संख्या में भी वृद्धि होगी तथा मृदा के भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होगा जिससे भूमि जल धारण क्षमता एवं वायु संचार में वृद्धि होती है फसल अवशेषों के प्रबंधन करने से खरपतवार कम होते हैं तथा जल वाष्प उत्सर्जन भी कम होता है जिससे सिंचाई जल की उपयोगिता बढ़ती है इसके अतिरिक्त यदि भूमि का पीएच मान अधिक है तो फसल अवशेष प्रबंधन से मृदा का पीएच मान सामान्य किया जा सकता है उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करते हुए लाभ प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हुए वातावरण को स्वच्छ बनाएं जिससे कि किसान भाई अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करते हुए अपनी आय में वृद्धि कर सकें उन्होंने बताया कि इकोनामिक टाइम्स के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार देश एवं प्रदेश सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश में गेहूं एवं धान के फसल अवशेषों को जलाने में कमी आई है मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसान भाइयों से अपील की है कि वह गेहूं एवं अन्य रबी की फसलों की हार्वेस्टर से कटाई के उपरांत फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आधुनिक प्रमुख कृषि यंत्र जैसे हैरो, कल्टीवेटर से जुताई करके फसल अवशेषों को खेत में दबा दें जिससे मृदा में जीवांश कार्बन की बढ़ोतरी होगी और फसल अवशेष खाद का कार्य करेगी इसके अतिरिक्त गेहूं एवं अन्य रबी फसल के फसल अवशेषों को खेत में फैला कर डी कंपोजर का प्रयोग करते हुए 8 से 10 दिन में फसल अवशेष सड़ जाएगी व खेत में उत्तम खाद का काम करेगी जिससे मृदा को सारे पोषक तत्व मिल जाते हैं और अगली फसल गुणवत्ता युक्त प्राप्त होती है

माध्यम

एसएस

से खाद्य सामग्री आपूर्ति, दवा वितरण, बेड की उपलब्धता, ऑक्सीजन की उपलब्धता, प्लाज्मा एवं रक्तदान के साथ साइको-सोशल काउंसलिंग हेतु मदद के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना के पूर्व एवं वर्तमान स्वयंसेवकों के माध्यम से सशक्त नेटवर्क तैयार किया है जो इस महामारी में 24×7 तत्पर होंगे यह जानकारी कालेज की प्रोफेसर डाक्टर सुनीता आर्या ने दी

मास्क भी

हराएंगे

संजय स्टूडियो